फूल और कांटे

OUR POEMS

फूल और कांटे

A Collection of Poetry by Dr Ram Lakhan Prasad & Mrs Saroj Kumari Prasad

फूल और कांटे

हमारे कविताओं की एक संकलन

Dr Ram Lakhan Prasad

&

Mrs Saroj Kumari Prasad

2013

हमारे दो शब्द

इन रचनावों को हम ने अपने घर की लक्षमी सरोज के प्रोतसाहन से लिखा है और हमारे चार बच्चे, प्राणेष, प्रनीता, हृषीता और रोहितेष ने भी अनजाने मे अपना सहयोग हमे दिया है। इन सब के विचारों को हम ने अपने कविताओं मे समेट लिया है। इन सब के योग दान के लिये हम तहे दिल से शुक्रया अदा करते हैं।

इन रचनावों को एक पुस्तक के रूप मे बनाने का ख़याल भी हमारे परिवार वाले और दोस्तों ने हमें दी है। पाठकगण इन रचनावों मे बहुत मनोरंजन पायेंगे और कुछ ज्ञान ध्यान की बाते भी मिलेंगी। पर सब से दिलचस्पी रखने वाली हमारी व्यंगात्मक कवितायें हैं जिन्हे पढ़ कर आप आनन्द तो पायेंगे ही पर इन मे छिपी कई समाज और देश की दुरदशा को भी परख सकेंगे। जो भी हो मै आशा करता हूं कि आप सब इन रचनावों से उतना ही मजा उठायेंगे जितना प्यार से इन्हे हम दोनो ने रचा है।

इतना होते हुये भी अगर कोई भी हमारी चरचा या विचार आप को नही भाती हो तो उन के लिये हम छमा चाहता हैं। इन को हमारी गलती न समझियेगा किऊंकि ये सब हमारे अपने निजी वर्षों की अनुभव, मति, कल्पना और समझ बूझ हैं। हमारे भावनावों से आप को सहमत होना या न होना यह आप की मर्ज़ी है।

किऊंकि आजकल हिन्दी पढने वालो की संख्या कम होती जा रही है यह हमारा निवेदन है आप से की आप इन रचनावों को खुद पढ़िये और दूसरों को पढ कर सुनाईये तभी आप इन का पूरा मजा ले सकेंगे।

कविता का लुत्फ तभी मिलता है जब पाठकगण इन को पहली बार एकांत मे पढ़े फिर दूसरों को पढ़ के सुनायें। आप भी ऐसा कीजिये और इन कविताओं का मजा लूटिये।

हम दम्पति पिछले पचास वर्षों से एक दूजे का बेजोड़ साथ देते रहे हैं। अब ऐसा लगता है कि हम एक ही शरीर मे दो जान लिये फिरते हैं।

हमे अब ऐसा लगने लगा है कि हम दोनों एक ही डाल के दो सुनहरे पंक्षी हैं पर हमारी आवाज, सुर, ताल, संगीत, धुन, बोली बाणी, आचार विचार, शब्द शब्दारथ, रहन सहन और लहर वहर एक हो गये हैं। इतना होते हुये भी हम को १४ मार्च २०१३ को बिछड़ना पड़ा। हमारी जीवन साथी एकदम के लिये बिछड़ गई और मैं अकेला हो गया। बस किसी तरह से जी रहा हूँ जब तक तन मे जान है।

इस लखन सरोज का मधुर मेल मिलाप, इस एकता, इस संयोजन और संघटन का नतीजा इन कविताओं मे हम ने मिल कर रचा है। इस मधुर कवितारस का पान कीजिये।

ऐसी उत्तम कविता की रस पान शायद ही कहीं मिलेगी। आइये रसपान करें।

राम लखन और सरोज प्रसाद

२०१३

विष्य सूचि

१. प्रार्थना
२. मेरा जन्म भूमि
३. हमारे आजा आजी
४. हमारे नाना नानी
५. गरीबो की सुनो
६. जीवन के सफर
७. अभी जाने की देरी
८. हमारे रिशते नाते
९. मेरा साथ देना हमसफर
१०. पूजा कर के शान्ति पाओ
११. हमारा बसेरा
१२. एक कप चाय हो जाये
१३. प्राणेष हमारा
१४. हमारी प्रणीता
१५. हर्षीता खुशियो की डाली
१६. रोहितेष आ गया आंगन मे
१७. भगवत महिमा
१८. जीवन पथ
१९. बुढ़ापा जब आ जाये
२०. दिवाली मे हमारे रिश्तें
२१. फीजी का भविष्य
२२. हसीन शिकायत
२३. परिवर्तन चाहिये
२४. आओ मौज करे
२५. बरसों के बाद
२६. अगला सफर
२७. जब हम दूर थे
२८. सरोज के लिये
२९. वक्त चाहिये
३०. मैं कौन हूँ
३१. जीवन की नैया
३२. वह कौन है
३३. बस एक मुराद
३४. आज के स्वर्गवासी
३५. यमराज की मजबूरी
३६. जीवन की कमाई
३७. ईशवर नजर आये
३८. नफरत
३९. पहेचान
४०. मेरा यार
४१. कुदरत
४२. गुनाह
४३. जिन्दगी
४४. तू कौन है
४५. प्यार की परख
४६. मां बाप
४७. मेरी पहेचान
४८. वो कौन है
४९. अंजाम
५०. हसरत
५१. कोशिश
५२. प्यार निभाते रहेंगे
५३. मानवता का प्रदर्शन
५४. प्यार करो ऐसा

५५. अगले जन्म
५६. सिर्फ मेरे लिये
५७. उन की याद
५८. मैं कया हूँ
५९. फूल और कांटा
६०. आसान कठिन राहे
६१. जुगो के रखे सांस
६२. अनोखे इनसान
६३. दोस्ती
६४. नया साल मंगलमय
६५. मानवता पे ध्यान
६६. मेरी आशायें
६७. दिल की आवाज़
६८. खेल तमाशा
६९. वादा निभाओ
७०. समझ आये
७१. हमारी मज़बूरी
७२. कया गुनाह
७३. जाने की देरी
७४. गंगा बहती है
७५. संसार को बदल दो
७६. मेरा अतीत
७७. कठिन राह
७८. जीवन
७९. उर्मिला का विरह
८०. अधिकार
८१. विचार करे
८२. ईशवर का सौगात
८३. हमारा जीवन
८४. जीवन कया है
८५. कैदी
८६. अधूरी श्रृंगार
८७. मीत बनो ऐसा
८८. तेरी जगह
८९. धोखा खायेंगे
९०. मत हंसो
९१. बहुत रोये होगे
९२. बिछड़ कर
९३. तड़पना
९४. खुद देख लो
९५. जनाजा और कयामत
९६. खुशबू महक रही है
९७. दीवाली
९८. उन को ढूँढते हैं
९९. मेरी तनहाई

१००. तेरी याद मे

अंतिम प्रार्थना

भूमिका

हम दोनों को बचपन से ही कविता रचने की लगन थी. अपने प्रारंभिक जीवन में पाठशाला के सालाना पत्रिका में हम अक्सर अपनी कवितायेँ लिखते रहे. फिर जब अध्यापन का काम करने लगे तब कई साप्ताहिक और मासिक पत्रिका में अपने कवितावों को छपने के लिए भेजते रहे. हमारी यह दिलचस्पी बढती गई और आज हमारे कवितावों की यह संग्रह आप के समक्ष प्रस्तुत है.

हम दोनों ने न जाने कितने विषय को ले कर अपनी तमाम कवितावों को रचते रहे. धीरे धीरे हमारी सभी रचनाओं का एक संग्रह बन गया. हमारे कई दोस्त और परिवार के लोग हमारे रचनाओं पर कई टिका टिप्पणी भी करते रहे. कुछ लोगों को हमारी कवितायेँ बेहद पसंद हुई तो कुछ लोग हमारे रचनाओं में कई खोट दिखाया. हम ने अपने सभी आलोचकों की बात को ठीक से सुना और गुना तथा अपने कला को और भी दिलचस्प बनाने की कोशिश करते रहे.

आज यह संग्रह जो आप पढ़ रहे हैं उन को सही स्थान

दिलाने वाले हमारे सभी आलोचक ही हैं. आप सब के अलोचानावों के लिए हम आप सब का हार्दिक शुक्रिया अदा करना चाहते हैं. आप सब ने ही हम दोनों को प्रोत्साहित किया की हम कविता रचते रहें और अपने हुनर को सुधारते रहे. नतीजा आप के सामने है.

खुद पढ़िए और दूसरों को भी पढ़ कर सुनाइए. जितना आनंद खुद पढने में मिलता है उस से कहीं ज्यादा लुत्फ़ दूसरों को पढ़ कर सुनाने में आता है.

याद रहे की कविता लिखने और पढने की लगन हम सब में है. किसी किसी में ज्यादा तो कोई में कम है पर हम सब इस संसार के कविताकार हैं. जिस जोश से हम ने इन कवितावों को रचा है हम चाहते हैं की आप उतने ही दिलचस्पी से इन को पढने की कोशिश करें.

Dr Ram Lakhan Prasad
&
Mrs Saroj Kumari Prasad (Late)
Retired Education Administrators
76 Ghost Gum Street Bellbowrie Qld
Australia .Phone 32028564
Mobile 0409518515
srlprasad40@hotmail.com

प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हांथों मे
है जीत तुम्हारे हांथों मे और हार तुम्हारे हांथों मे

मेरा निशचय बस एक यही एक बार तुम्हें मै पा जाऊं
अर्पण कर दूं दुनिया भर का सब प्यार तुम्हारे हांथों मे

जो जग मे रहूं तो ऐसे रहूं जो जल मे कमल का फूल रहे
मेरे सब गुण दोष सर्मपित हो भगवान तुम्हारे चरणों मे

या मै जग से दूर रहूं और जग मे रहूं तो ऐसे रहूं
इस पार तम्हारे हांथों मे उस पार तुम्हारे हांथों मे

यदि मानुष का मुझे फिर जन्म मिले तेरे चरणों का मै पुजारी रहूं
इस पूजक की एक एक रग का हो तार तुम्हारे हाथों मे

जब जब संसार का कैदी बनूं निशकाम भाव से करम करूं
फिर अन्त समय मे प्राण तजूं निराकार तुम्हारे हाथों मे

मुझ मे तुझ मे बस भेद यही मै नर या नारी हूं आप नारायन हो
मै हूं सन्सार के हाथों मे सन्सार तुम्हारे हाथों मे ॥

मेरा जन्म भूमि बोतीनी

गंगा सी नदी बह रही और पर्वत भी हिमालय सा लगता है
हुआ था जन्म यहीं हमारा हमे बोतीनी नाम सुन्दर लगता है
दुनियां भर मै घूम के आया पर खुशियाली ऐसी कहीं न पाया
सब सुख देने वाली जन्म भूमि से अब कभी न छुटे मेरा नाता

हरे वृक्ष और जंगल झाडी,कच्ची सड़क पर दौड़े पुरानी गाड़ी
कड़ी मसक्कत करने से कभी नही डरते वहां के नर नारी
खेतों मे कई फसल लहराये ईख, अनरस और सभी तरकारी
शाला के बाद मै किसानी करता और साथ मे थे बाप महतारी

छोटे छोटे नाले बहने लगते थे जब बड़ी बरसात आ जाती थी
खेल कूद कर उन झरनो मे मेरी बचपन पुलकित हो जाती थी
मुखे याद हैं वो पथरीले खाही जहां नयबी के बृक्ष सुस्जित थे
फल फूल तोड़ते और मीन पकड़ते होते कभी न लज्जित थे

मैना बुलबुल कबूतर की भरमार लगी थी धान के खरिहानो मे
कुछ फसल चे खा जाते पर मार भगाते हम उन को गुलेलों से
ऐसी सुन्दर दृश्यों को देख मै ने अपना पच्चीस साल बिताया
और किसी वस्तुओं से ऐसा सुख हमे कभी भी नही मिल पाया

भांति भांति के तरुण लता और मन भावन मैदान भरे पड़े थे
खेल कूद तो होते ही रहते कियोंकि सुदामा जैसे मित्र बड़े थे
ईन सब शुभ कामों को देख सुन कर मन मेरा प्रसन्न होता था
धन्य है तुम्हारा प्रभू संसारिक दुख ताप छिन मे खो जाता था

आज भी जब मै बोतीनी जाता उस पर्वत के पास या नदी तट पर
होता हूं मै खुशी बहुत और मधुर मुस्कान भी आ जाती है होठों पर
मन मे अनेक ख्याल आ धमकते ,जब बोतीनी की यादें सामने आती
गुनगुन करते रकमरकम के भौंरे याद उस भूमि की कभी न जाती

सब सगे सम्बन्धी अब नही रहे और अपने पड़ोसी भी सब चले गये
यह लम्हे जब याद आ जाते हैं तब वहां की सुमधुर दृश्य हमे सताये
माता पिता ने पाला पोषा और हुनर दिया पर कभी नही वे अघाये
लखन की नजरों से बोतीनी को देखो तो तुम्हारा भी मन भर जाये

४ नवम्बर २००९

हमारे आजा आजी

आजा हमारे बड़े प्यारे हैं पर आजी भी सुन्दर लगती है
उन के अपने बच्चे नहीं है ऐसा क्यों हम को लगती है
उन के बच्चे सब बड़े हो गये ,हम आ गये उन के जीवन में
काम तो कुछ करते नहीं पर ख़ुशी लातें हैं वे हमारे जीवन में
बूढे हो गये, दोड़ धूप और खेल कूद तो वे कर नहीं पाते हैं
यही बड़ा अच्छा है कि हमे पैसा देकर दूकान ले जाते हैं
आजा तो पतले दुबले हैं, पर आजी तो खूब तगडी लगती है
पर उतना मोटी भी नहीं और मेरे जूते की बन्धन बांध देती है
जब वे हम को घुमाने ले जातें हैं तब वे राह में रुक जाते हैं
साँस फूलने लगती उनकी, पानी पीते और दावा भी खाते हैं
जल्दी तो उनको रहती नहीं आहिस्ते आहिस्ते करते सब काम
जब हम घर में लुक जाते हैं चिल्लाते ले कर हमारा कई नाम
उन का चस्मा तो अजीब है , हम को तो कुछ दिखाता ही नहीं
उन के दांत निकले जब बहार उन की बात कुछ समझाता नहीं
आजा आजी बड़े होशियार उन के पास सब सवाल के जवाब हैं
भगवान् की शादी क्यों नहीं हुई कुत्ते क्यों बिल्ली को खेदते है

जब हमें अपनी कहानिया सुनाते कभी नहीं वे हिचकिचाते हैं
अगर हम चाहते तब उसी कहानी को वे कई बार सुना देते हैं
जब कभी वे झुक के कुछ उठाते उन का हवा निकल जाता ह
ये आवाज़ कहाँ से आई आजा कह देते रेडियो में कोई गाता है
यह हमारा सौभाग्य है ऐसे अच्छे आजा आजी हमे मिले हैं
वे सदा ख़ुशी रहे रहे साथ हमारे हम यही प्रार्थना करते हैं
हम बदमाशी भी करें वे लोरी गा कर प्यार से हमे सुलाते हैं
हम ने जब छोटू से पूछा कि तेरे आजा आजी कहाँ रहते हैं
वे कहीं एअरपोर्ट पर रहते हैं, हम जब चाहें उन्हें ले आतें हैं
मेरे आजा तो इस दुनिया के सब से चतुर आदमी लगते हैं
मेरी आजी भी उतनी ही अच्छी मुझे बहुत प्यार करती है
यही हमारी चाहत है कि आजा आजी साथ हमारे सदा रहे
हम उन के तरह होशियार बने,पढ़े लिखे और खूब मौज करे

हमारे नाना नानी

नाना हमारे अब बूडे हो चले हैं और नानी भी तो बूढी लगती है
पर उन के घर मे गज़ल बजे और सेटेलाइट टीबी भी चलती है
कई वषों तक अध्यापन कर के अब घर बैठे है अवकाश ले कर
हर रोज उन का रविवार है, अब वे रहते हैं बहुत खुश हो कर
फीजी से आ कर बेलबाउरी मे बसे, मन मे भा गया यही जगह
अडोस पडोस के इस बस्ती के लोग भी तो चाहते है यही जगह
जब भी हम अपने ननिहौरे आते,हम को खूब मजा मिल जाता है
नाना की मीठी बातें सुन कर और नानी के भोजन मन भाता है
नानी जी कितनी प्यारी हो तुम,यह बात तुम्हे हम बतला देते हैं
नाना भी खूब कमाल के चीज है, यह तो हम ठीक से जानते हैं
छोटे पर जब हम चलना सीखे, तुम्हारे ही हांथ पकड पकड कर
जब लडखडा कर गिर जाते, तुम्ही उठाते ताता थईया कह कर
नानी के शब्दों मे वह मीठापन है, जो मद के स्वाद सा लगता है
नाना हर त्योहार मे खुशी मनाते, उपहार तो हम को मिलता है
शाला की छुट्टी जब जब आती है, हम बेधडक यहां चले आते हैं
अपने शब्दों से तुम दोनो हमे शक्ति देते मन हमारे बहल जाते है
हम पर तुम दोनों के हांथ का छाया, एक बडा पेड सा रहता है
घर मे सब चीज़ बिखरा देतें, तो तुम को गुस्सा नही आता है

कोम्पिउटर पर सक्रेबल खेलकर जिता देते हो सब दिन हम को
हार मान लेते हो तुम दोनो बडा सुकून मिलता है हमारे मन को
घर आंगन मे कई पेड लगे हैं,फल फूल भी हम को मिल जाते हैं
झूला झूलने को मिलता है और क्रीकेट खेल कर मन बहलाते हैं
गज़ीबो मे एक सपा भरा है और उस मे हम गोते खूब लगाते हैं
शर्दी हो या गर्मी हो, गरम पानी मे मौज सदा हम पा सकते हैं
नाना के दरबा मे दो मुर्गी भी हैं जिन का अणडा हम पा जाते हैं
नानी के पिंजडे मे कभी कभी दो छोटे चिडियों के जोडे रहते हैं
आगे आंगन मे तालाब बना है, जिस मे कमल के फूल लगे हैं
नाना नानी हमारी खूब खयाल रखते है हम को अच्छा लगे है
भगवान उन की रक्षा करे , और हम भी उन की सेवा करेंगे
ऐसे ही नाना नानी सब को मिले, हम सदा यही दुआ करेंगे ।

१७.०१.२०१० (जैडन का जनम दिन मुबारक हो)

गरीबों की सुनो

और सेवा करो !

रोटी कपड़ा और मकान यही तो है हमारे सुखी जीवन के पहचान
इन का अभाव हो जाये तो सदा रोता और बिलखता है इनसान
लोग कहते है कि दाने दाने पर लिखा रहता है खाने वाले का नाम
मै जानता हूं कि हर कपड़े पर दिखाई देता है पहनने वाले का नाम
खान पान ऊंचे हो तो इनसान को हम धनवान कहते है
भूख प्यास से पीड़ित हो तो उन्हे हम भिखारी कहते है
धनवान हों या गरीब हों यह सब किसमत का खेल है
ऐ दोनो एक नदी के दो किनारे जिन का न कोई मेल है
मेहनत करे इनसान कोशिश करता रहे तो मिलते है बड़े इनाम
बेकारी और आलस बुरी बला हैं,जो हम को कर देती है बदनाम
खान पान को तो तरसेंगे हम पर नहीं मिलेंगे हमे कपड़े और मकान
रहन सहन तो हमारा गिर जायेगा और बिगड़ जायेगी घर की शान
हम पैदा हुये हैं इस दुनियां मे आन बान से जीने के लिये
सदभावना बढ़ाने,प्रोतसाहित करने और कल्यान के लिये
आओ हम नेकी करें जन सेवा कर के जग की भलाई करें
पुन्य करें कुछ ज्ञान ध्यान की बातें करें और गुनगान करे ।
किसमत से अगर हमारे जीवन मे कमी नही है रोटी कपड़े और मकान की
चले चलो अब हांथ बटाने, मदद करने सभी दुखी और गरीब इनसान की
जो लोग इस दुनियां मे इस राह पर चलते है,उनको मेरी लाखों दुवाये मिले
"लखन"उन का सदा आभारी रहेगा, दुआ है कि उन के जीवन मे फूल खिले ।
दुख इस बात की है कि हम दूसरे की पीड़ा जानते नही
हमारे हालत भी एकदम बदल सकते हैं हम मानते नहीं
दूसरे का दुख दूर करने का अमल किसी को लग जाये
तो ऐसा हो जाता है की उन का भी जीवन सुधर जाये ।
अगर न रहे रोटी कपड़े मकान की चिन्ता तो इनसान बेफिक्र हो जाता है
जिन्हे इन की सोच हो जाये उन के जीवन मे कितना तूफान आ जाता है
मेरे दोस्तों ऐसा करो की जब तक जियो तुम गरीबों की मदद किया करो
अपनी पुन्य की झोली भरते रहो,समय पाकर निधन की सेवा करते रहो ।

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below